श्री हरिरायजी आप ही के पुत्र हे। आपके यहाँ द्वितीय निधी श्री विट्ठलनाथ जी बिराजें। उनकी सेवा शृंगार भोग राग साज सज्जा में आपने वृद्धि कीनी तथा श्री गोवर्धनधर के हू बहुत मनोरथादि करि रिझाये। आज सों लैके पौष कृष्णा द्वादशी तक प्रतिदिन मयूर पक्ष की चन्द्रिका धरें। ताको आशय मयूर वियोगी निष्काम भक्त है। विट्ठलवर ने ६ मास तक वियोगानुभव कियौ। तासों आपको उत्सव बीच में राखि कै छः दिन नित्य मयूर पक्ष धरें।

पौष कृष्णा ८—उत्सव के पहले दिन को शृंगार वस्त्र लाल साटन के सादा घेरदार। सूथन मोजा। पाग, चन्द्रिका सादा, पन्ना मोती के आभरण। छोटो शृंगार कर्णफूल को। पिछवाई खंड लाल साटन की किनारी वारी लूम छोटी पन्ना की। कटि पटका। ठाडे वस्त्र पीरे नीबूआ रंग के। दिन भर वधाई ढाढी पलनादि गवें।

पौष कृष्णा नवमी श्री गुसाईंजी विट्ठलनाथजी को उत्सव—देहली बड़ी मढ़ें। बगीचा माला गली पंखा गली तथा सब स्थानन में चौक पूरे जाँय। बेल मढ़े। बन्दनमाल सब स्थानन में जन्माष्टमी बराबर नेग सामग्री आदि। अभ्यंग उबटन वस्त्र नूतन केसरी साटन के सादा। बागा चाकदार सूथन, मोजा, कुल्हे केसरी जोड़ पांच को। आभरण उत्सव के तीन जोड के। भारी सों भारी शृंगार। वनमाला को हांस नवल कठला तथा बाजू वेगेर दुहेरा तीन जोड के शृंगार में सब आभूषण तिहेरे। गादी तकिया चौकी जडाऊ लाल मखमल के। वन्दनमाल भीतर। सिलमा सितारा की। सारो उपक्रम जन्माष्टमीवत्। वासन सब पीरे। जडाऊ झारी बंटा अमखोरा आदि आरसी जडाऊ। बड़ी वेणु वेत्र जडाऊ आवें। पिछवाई जन्माष्टमी वारी। चौक जडाऊ। दिन भर आरती थारी की। जमना जल दिन भर। बारा जलेवी को शृंगार। राजभोग में तिलक होय। चून की आरती थारी की। नवनीत प्रिय के यहां सूँ आवे। राई नौन नौछावर होय। हुस्ताजी की आरती आवे। महाप्रभूजी के पादुकान को स्नान होय। शृंगार होय। तिलक होय। भोग पृथक् आवे। झारी पृथक् आवे।

आज सों शाकघर की सुहाग सोंठ अनवसर में दोनों समय आवे। गहना घर सों प्राचीन खिलौना आवें श्री गोवर्धनधर के सन्मुख। केवल वस्त्र सादा बाकी सारी सेवा क्रम जन्माष्टमीवत् होय। दिनभर पद या प्रकार होंय :—

महात्म्य में—प्रातः समें उठ करिये श्री लक्षमन। जगायवे में—यह भयो पाछलो प्रहर। कलेऊ में—आछो नीको लोनो भोर ही। छगन मगन प्यारे। मंगला सन्मुख—आज बड़ो दर्बार देखो नन्द। अभ्यंग में—जन्माष्टमी की बधाई गवे। शृंगार होत में—पौष कृष्ण नौमी जब आई ब्रज भयो महर के पूत। सुनोरी आज नवल बधायो है। महाप्रभूजी के अभ्यंग होय तब—मिलि मंगल गावो माई सवे। रानीजू आपुन मंगल गावे। शृंगार सन्मुख वर्ष-पत्र बचे। आनन्द आज नन्दजु के द्वार।

राजभोग आयवे पर माला बोले दर्शन खुले तब तक ये गवें। टोडी की बधाई के चार पद गवे गुसाईंजी के। फेर ढाढी गवे। हो ब्रज माँगनों ब्रज तजि अनत न। ब्रजपति माँगिये जू। नन्दजू मेरे मन आनन्द भयो। नन्दजु तिहारे सुख दुख गये। राजभोग सन्मुख में—आज बधाई को दिन नीको। भोग में—बधावो श्री ब्रजराय के रानी। आरती—यह धन धर्म ही सो पायो। शयन में—सुभग सहेली मिलि आवो। पोढवे में—तिहारो घर सुबस वसो। आनन्द वधावनो रंग वधावनो।

प्रश्न—सबसे बड़े गोपीनाथजी भये उनको उत्सव साधारण माने तथा कई स्थानन में तो माने ही नहीं और गुसाईंजी को उत्सव सर्वत्र महामहोत्सव समान माने याको कारण ?

उत्तर—यहाँ जो भी जैसी भी सेवा उत्सव महोत्सव होय, वे सब भागवतोक्त तथा प्रभु आज्ञा सों होय है। गोपीनाथजी को स्वरूप बलदेवजी को तथा विट्ठलनाथ जी गुसाईजी को श्रीकृष्ण स्वरूप मान्यो जाय। श्रीमद्भागवत में बलदेवलीला बहुत कम वर्णन कीनी तथा जन्माष्टमी सर्वत्र माने। बलदेव छठ बहुत कम स्थानन में मानें तासों यहाँ गोपीनाथजी को उत्सव बहुत कम स्थानन में मानें। गोपीनाथजी बलदेव स्वरूप है। यह वल्लभाख्यान में या प्रकार है।

१—"बलदेव श्री गोपीनाथ कहिए श्री विट्ठलनन्दानन्द। ए वेद पथ विस्तारसे, जनोने आपशे आनन्द।"

२—"रमते रमत डीठडा बलदेव श्रीगोविन्द पुत्रभावे प्रकटसे मन उपन्यौ आनन्द"। भावनावारे द्वारकेशजी मूल पुरुष में कहे हैं :—

"गायो श्री गोपीनाथ जी जब जन्म लीनो आय के।
जानि बल को रूप हरखित देत दान बढ़ाय के॥"

तासों श्रीकृष्णस्वरूप विट्ठलनाथजी हैं। सो सारी लीला उत्सव महोत्सव इनकोही मनायो जाय। जन्माष्टमी के समान उत्सव तथा उपक्रम मानवे को कारण भगवदाज्ञा भई सो कुम्भनदासजी की वार्ता प्रसंग बारह में देखनी चाहिये।

सो जन्माष्टमी समान ये उत्सव भगवदाज्ञा सों होय। तथा समस्तसेवक वैष्णव ये सामग्री करिके मनोरथ करै हैं। यहाँ हर टीकेत के उत्सव पै भगवदाज्ञासूँ बाराजलैवी को ही शृंगार आवे।

प्रश्न—श्री जी घेरा क्यों न अरोगें घूटी क्यों ?

उत्तर—घेरा की सामग्री पर घूटे बाल भोग ही अरोंगे।

बच्चा खावे तो रस फैले तासों अब शाक घर वारे अरोगावन लगे हैं। सो ठीक नहीं प्रभु इच्छा।

विशेषता--स्वरूपलीला वर्णन—

जगद्गुरु वल्लभ महाप्रभू के द्वितीयकुमार श्री विट्ठलेश प्रभु को प्राकट्य सं० १५७२। ताको आशय या प्रकार 'अंकानांयाम तो गतिः' से दो दो में दूसरे स्वरूप चन्द्रावलि भक्त माने सात के अंकसों आपने सप्तद्वीप में पुष्टिरस प्रसारित कियो पाँच के अंक से पञ्चतत्वशुद्धी पञ्चज्ञानेन्द्रिय पञ्चकर्मेन्द्रियन को प्रभु-विनियोग कराय एक को अंक ब्रह्म में ब्रह्मत्व सिद्ध कियो जो प्रधान संबंध देके करैं।

पौषमास—यह पोषणमास होवे सो "पोषणं तदनुग्रहः" की भाँति पौष मास लीनो। नक्षत्रन में पुष्य नक्षत्र पवित्र मान्यो। अरु पुष्य सोही पौष भयो यासों आपने पुष्टि सेवा प्रकार को प्रसार कीनो।

नवमी तिथि या लिये लीनी कि आप उभय लीलारूप द्वितीय स्वामिनी होयवे सों। रामनवमी चैत्र शुक्ला ९मी तथा नन्द महोत्सव में नवमी भाद्रपद कृष्णा की। एक स्वरूप विरुद्धधर्माश्रय रूप श्रीकृष्ण को; दूसरो मर्यादा पुरुषोतम राम को। तासों आपने मर्यादा रूप सेवा प्रकार आचार विचार की मर्यादा स्थापित करी। विरुद्धधर्माश्रय रूप आपने सभी वर्ण ब्राह्मण शूद्रादि एवं स्त्रीन को शरण लै उनके माथे प्रभु पधराये। सेवा करवाई तासों उभय लीलारूप आपने यश को विस्तार कीनो। नवमी तिथि में नव को अंक पूर्ण होवे से आप सर्वगुण सम्पन्न सर्व कलाविद् लौकिक अलौकिक में करि संसार के प्राणीन कों प्रभु साम्मुख्य करायो तासों नौमी लई।

चरणाद्रि (चरणाट)—प्राकट्य स्थल भक्ति वर्धन हेतु है श्री गुसाईं जी में भगवान् राम एवं लीला नायक श्रीकृष्ण दोऊन को समन्वय मिले है। भावना है राम अयोध्या में, कृष्ण गोकुल में, आप चर्णाट में। अयोध्या में—सरयू, गोकुल में यमुना, चर्णाट में गंगा।

लीला में—

अहल्या, तारा, मन्दोदरी रामने उद्धार कीनी।
पूतना, द्रौपदी, कुब्जा कृष्ण ने उद्धार कीनी।
विट्ठलेश ने ताज, हमीदावानू, कूंजड़ी कूं शरण में लीनी।

खग मृग व्याध राम ने। बकासुर, अधासुर, धेनुकासुर, कृष्ण ने। कपोत-कपोती, हंस-हंसनी कूं गुसाईं जी ने दीक्षा दीनी। राम भक्त मन चोर, श्याम सुन्दर माखन चोर। विट्ठलवर ने भक्तन के दोषन की चोरी कीनी। राघवेन्द्र के श्रीहस्त में धनुष, कृष्ण के श्री हस्त में वेणु। विट्ठलवर ने अपनी वाक् सुधासों मोहित किये। राम ने परसुराम पे कृपा की। कृष्ण ने अक्रूर पे कृपा की। विट्ठलवर ने गोपाल दास पै कृपा की। रामने विश्वामित्र की यज्ञ रक्षा की। कृष्ण ने यज्ञ पत्निन को उद्धार कीनो। विट्ठलेश ने सेवा तथा अन्नकूटरूप यज्ञन की रक्षा कीनी।

पुष्टि मार्गीय भक्त आप में और प्रभु में अभेद माने हैं।

आसावरी—

प्रिय नवनीत पालने झूले श्रीविट्ठलनाथ झुलावे हो।
कबहुक आप संग मिलि झूले कबहुँक उतरि झुलावे हो।

छाक में (सारंग)

बाल गोपाल आनन्द कन्द।
बैठे है कालिन्दी तट बाँटत छाक यशोदा नन्द।
हंसि-हंसि भोजन करत परस्पर बाढ़ो रति रसरंग।
श्री विट्ठलनाथ गोवर्धनधारी बैठे जेंवत एक ही संग॥

आपके जीवन लीला और स्वभाव को वर्णन (राग सारंग)

जयति श्रीवल्ल सुत उद्धरन त्रिभुवन फेर नन्द के भवन में केलि ठानी।
इष्ट गिरवरधर सदा सेवत चरन द्वार चारों बरन भरत पानी।

आपने अपने कार्यकलाप में चतुर्विध लीला फल चतुष्टयी में सिद्ध कीनी वो या प्रकार है—

(१) अष्टनिधि स्थापना—मथुरेशजी, विट्ठलनाथजी, द्वारकानाथजी, गोकुल नाथ जी, गोकुलचन्द्रमा जी, मदनमोहन जी, श्रीनाथ जी, श्री नवनीत अरु छ गोद के ठाकुर जी या प्रकार निधियन की स्थापना कीनी।

(२) अष्टयाम सेवा—मंगला, शृंगार, ग्वाल, राजभोग, उत्थापन, भोग, संध्यार्ति, शयन।

(३) अष्टछाप की स्थापना—अष्टयाम कीर्तन सेवा के लिये :—चार वल्लभ महाप्रभू के तथा चार आपके सेवक—

सूरदास, परमानन्ददास, कृष्णदास, कुम्भनदास श्री वल्लभ के तथा गोविन्द, छीतस्वामि, नन्ददास, चतुर्भुजदास आपके।

(४) आपकी अष्टविधि लीला—(१) महोदारत्व, (२) दयालुत्व, (३) परोपकारित्व, (४) न्यायपरत्व, (५) व्यवहार कुशलत्व, (६) शरणागत वत्सलत्व, (७) अपूर्व त्याग, (८) भगवदनुराग।

भक्त भावना से अष्टयाम सेवा स्वरूप गुसाईं श्री विट्ठलनाथजी के पद।

मंगला—नन्ददास की वाणी में—

प्रात समै श्री वल्लभ सुत के वदन कमल को दर्शन कीजे।
वेद वदत पूरण पुरुषोतम उपमा कोन पंटतर दीजे।

शृंगार—छीतस्वामि की वाणी में—

सुखद सरूप श्री विट्ठलेश राय।
वेद वदत पुरेण पुरुषोतम श्री वल्लभ गृह आप।

ग्वाल—[गौ दोहन गौचारण करिवे वारे]

श्री विट्ठलेश चरण चारु पंकज मकरन्द लुब्ध,
गोकुल में वसत करत निज केली।
पावन चरणोदक संतत सुरसरी वहे ताप दूर हरें,
वदन विन्दु वेली।
.....

छीत स्वामि गिरधर लीला सव फेर करत धेनु,
दुहत गोप पास संग हाथ सेली।

राजभोग—

वल्लभ नन्दन रूप अनूप सरूप कह्यो नहिं जाई।
.....

सुखमय रूप सुखद एक रसना कहा लों वरनौ, गोविन्द बलि बलि जाई॥

उत्थापन—

सदा व्रज में ही करत बिहार।
तब के गोप वेष वपु धार्यो अब द्विजवर अवतार।
.....

चतुभुज प्रभु सुख शैल निवासी भक्तन कृपा उदार।

भोग—

श्री वल्लभनन्दन वह फिरि आये।
वेद सरूप फेर वह लीला करत आप मन भाये।
वे फिर राज करत गोकुल में वोही रीत प्रकटाये।

वही शृंगार भोग छिन छिन में वह लीला पुनि गाये।
जै जसुमति को आनन्द दीनो सो फिर व्रज में आये।
श्री विट्ठल गिरधर पद पंकज गोविन्द उर में लाये।

सन्ध्यारति—[राग केदारा]

फिरि व्रज बसो श्री विट्ठलेश।
कृपा कर दर्शन दिखावो वह लीला वह वेश।

शयन—[राग हमीर]

भजो श्री वल्लभ सुत के चरण।
नन्द कुमार भजन सुखदायक पतित पावन करण॥

गुसाईं जी श्री विट्ठलनाथ जी की अष्ट विधि लीला

(१) **महोदारता**—कृष्णदास अधिकारी ने गोपीनाथ जी के बहूजी के कथनानुसार आपको मंदिर वन्द कियो अरु आप चन्द्र सरोवर विराजे। नित नई विज्ञप्ती पठावते जब गिरधर जी ने कृष्णदास को बन्दी करवायो और आपको पुनः आषाढ़ शुक्ला ६ को श्रीजी के मंदिर प्रवेश अधिकार प्राप्त होवे पर आज्ञा किये—कृष्णदास बन्दीगृह ते छूटेगो तो मैं आऊँगो। कृष्णदास जी बन्दीगृह ते छूटे और चरणन में परे प्रार्थना करी—

परम कृपाल श्री वल्लभनन्दन करत कृपा निज हाथ दे माथे।

(२) **दयालुता**—अलीखान, रसखान, खानखाना।
ताज धोंधी कमावत आदि को शरण लीने—व्रज में श्री विट्ठलनाथ विराजे।
छीत स्वामि गिरिधरन श्री विट्ठल प्रकट भक्त हित।

(३) **परोपकारिता**—के लिये देखो वार्ता ४६ कूँजरी की।

गोविन्द स्वामी ने हू गायो है—

प्रणमामि श्रीमद् विट्ठलं।
वेद धर्म प्रमाण कारण जीव मात्र सुख कन्दं।

(४) **न्याय परता के लिए देखो वार्ता ६३**—एक साहूकार के बेटा की बहू को यवन अपनी करनो चाहतो, आपने सुन्दर न्याय करिके वाकूं बचाई। चतुर्भुज दास कहे हैं—"श्री विट्ठलनाथ अनाथन के तारण।"

(५) **व्यवहार कुशलता**—लाड़ बाई को भेज्यो भयो बाज बहादुर श्री विट्ठलनाथ जी पर वार करन आयो। आपने बातन बातन में बस करके सेवक कीनो, आशीर्वाद लेके गयो। कृष्णदास जी कहे हैं—

जो पै श्री विट्ठलनाथ ही गावे ।
दिश दिश विदिश रसातल भूतल कित कोऊ दुख पावे ।

(६) **शरणागत वत्सलता**—वैष्णव वार्ता—दो वैष्णव आगरा सों चलिकै गोकुल आये रात्री को आप पौढ़वे पधारते, ताही समय शरण लीने—

तुमारे चरण कमल शरण ।
राखो सदाँ सर्वदा जन को विट्ठलेश गिरधरण ।
तुम बिन ओर नहीं अवलम्बन भव-सागर दुस्तरण ।
भगवानदास जाय बलिहारी त्रिविध ताप उर हरण ।

(७) **अपूर्व त्याग**—बादशाह अमोलक रतन हार शिरोपा व बागा वस्त्र आदि लेकर गोकुल आये । आप ठकुराणी घाट पै बिराजे हते आपने लीला करी । वे रत्न हारादि सब जमना जी में पधराय दीने । बादसाह स्तब्ध रहि गयो । आपने पुनः अंजुली में भरके भौत से रत्न वैसे ही निकासे । आज्ञा करी—पहचानि लेऊ तब सों इनकूं पुरुषोत्तम स्वरूप समझन लग्यो ।

प्रभुता प्रकटी विट्ठलनाथ की ।
.....

चतर्भुज दास आस परिपूरण छाया अम्बुज हाथ की ।
कृपा विशेष विराजी नित प्रति जोरी गिरधर साथ की ।

भगवदनुराग—भोग राग शृंगार को मंडान बढ़ायो । ऐसे आपके असंख्य गुण हैं । आपके चरित परक अनेक ग्रंथ हैं ।

गोवल्लभ गोवर्धनवल्लभ श्रीवल्लभ गुण गिने न जाई ।
.....

छीतस्वामि गिरधरन श्री विट्ठल नन्दनन्दन की सब परिछाई ।

पौष कृष्णा १०—परचारगी उत्सव को शृंगार वस्त्र वगैरह सब पूर्ववत् । चौखटा दूसरो आभरण शृंगार दो जोड़ के झाझें बन्द । आज मंगला सों लैके लौं शृंगार द्वारकेशरायजी भावना बारेन को मूल पुरुष गवे । दिनभर ढाढी पालना बाललीला तथा बधाई के पद होंय ।

शृंगार में रत्नाभूषण को भाव—हीरा, पन्ना, माणक ये तीन रूप सों सम्पूर्ण आभरण तिगुने धरैं । भावना या प्रकार माने—स्वामिनी जी, (चन्द्रावलीजी) गुसाईं जी तथा महाप्रभु जी ।

पौष कृष्णा ११—गोस्वामी तिलक गोविन्दजी को उत्सव । देहली वन्दनमाला । हांडी शृंगार बाराजलेबी को । वस्त्र सफेद खीन खाप के । बागा चाकदार सूथन

ठाडे वस्त्र लाल कुल्है । पन्ना की चोटी आभरण सारे पन्ना मोती के । वनमाला को शृंगार कुण्डल मयूराकृति । पिछवाई तीन तिवारी वारी सफेद धरती पै वृक्ष दोनों दिसान में लतापता वारे चारों दिस हरी, पीरी, लाल बेल तैसोई खण्ड । दिन भर बाललीला के पद गवें । बाललीला को शृंगार पहिरें ।

विशेषता—

आज के उत्सव नायक प्रथम गोविन्दजी श्री गोस्वामी तिलकायत विट्ठलेश जी के द्वितीय पुत्र । आप गोवर्धनेशजी के कोई बालक न होवे पर आप तिलकायत बने आपको जन्म वि० १७८५ आज के दिन नाथद्वारा में भयो । आप पुष्टि मार्ग में बालभाव भावित तिलकायत भये । पुष्टिमार्ग में बालभाव प्रधान होवे सो पुष्टि करिवे हेतु पौष में प्रकटे । समस्त वैष्णव भगवदीयन कों कर्मेन्द्रिय, ज्ञानेन्द्रिय एवं मनसे प्रभु सेवा में विनियोग करायवे हेतु एकादशी कों प्रकटे एक समय आप ही शैय्या मंदिर में रहि गये तब श्री गोवर्धनधर श्रीनाथजी ने अपने श्रीहस्त सों प्रसाद खवायो ताके यशस्वरूप आज सफेद खीनखाप के वस्त्र तथा अनुराग बन्यौ रहे तासों लाल ठाड़े वस्त्र धरें । वियोगानुभव करिवे वारो बालक सदा निष्काम होय हैं तासों मयूर पक्ष कुल्हे तथा पन्ना मोती के भूषण धरें ।

मंगला एवं शयन के पदवत् आपको स्वरूप स्वभाव एवं लीला है ।

आसावरी राग—

जादिन कन्हैया मोसों मैया मैया कहि बोलेगो ।
.....

परमानन्द प्रभु नवल कुंवर मेरो ग्वालन संग वन में किलोलेगो ।

उपरोक्त पद में सेवासिद्धान्तादि के—गलियारो है वाही में विवरण है घूमघूम के प्रश्नोत्तर । वही खिरक में जायके दुहनो ग्वालरूपी वैष्णवन के संग जगत् रूपीवन में डोलेगो तब परमानन्द मानूंगी ।

यह पद शयन में गवे—

(१) सुन बड़भागिन हो नन्दरानी गोद लिये खिलावत लाले ।

(२) आनन्द की निधि मुखकमल लालको,
ताहि निहारत निशि अरु वासर छविन परत बखानी ।
गुन अपार बुद्धी विस्तार कहि न परत निगमबानी ।
हरिनारायण श्यामदास के प्रभु देखो जसुमति कूख सिरानी ।

आपने कई मनोरथ किये तथा आपके तीन पुत्र भये—प्रथम दामोदरजी १८२३ में, दूसरे गिरधारीजी १८२५ में। इनने ही तिलकायत होय कै श्रीजी को घस्यार पधराय नवीन नाथद्वारा निर्मित कियो। तीसरे १८२७ में गोकुलनाथजी।

पौष कृष्णा १२ [तीसरी द्वादशी]—वस्त्र हरे खीनखाप के, किनारी के। बागा चाकदार। सूथन। मोजा ठाडे। वस्त्रलाल। वनमाला को शृङ्गार टिपारा पन्ना को। जोड़ मयूर पक्ष को। आभरण हीरा के। पिछवाई—हरी धरती में सुनहरी फूल मय किनारी के। खण्ड भी ऐसो ही। सामग्री खरमण्डा खीर। चौकी तीसरी।

पौष कृष्णा १३—शृंगार ऐच्छि वस्त्र बागा घेरदार पिछवाई खण्ड ठाडे वस्त्र पाग। मोजा। गादी तकिया चौकी सब बेंगनी। बेंगनी घटा। बिना किनारी के आभरण हीरा मोती के चन्द्रिका गोल रूपहरी त्रबल धरें। पद श्याम घटा माफिक। कछू हरे नीले भाव के होंय। हीरा की हमेल धरें। आज सेवा बेगी होय। पांच शृंगार बाल लीला के गुसाईंजी की बाल लीला वारे। प्रथम कुल्हे को शृंगार ग्यारस कूँ भयो दूसरो ऐच्छिक अब चौदस कूँ होन लाग्यो। तीसरो गोविन्द दामोदरलालजी महाराज के जन्म दिन पै। हीरा की टोपी। चौथो पौष बदी ३० कूँ। सफेद ठाडे वस्त्र जरी के। श्याम बागा घेरदार तथा हीरा कै आभरण कटि पेच वारो।

पौष कृष्णा १४—शृंगार ऐच्छिक परन्तु अब नेमी है गयो। आज को शृंगार बाल लीला को जन्माष्टमी के बाललीला के शृंगार पाँच। भाद्रपद कृष्ण ११ सों लैके अमावस तक होय वामें उष्णकालीन शृंगार होय। याही भाव सों श्री विट्ठलेश गुसाईंजी के भी बाल भाव के चार शृंगार होय है। ये गोविन्द तिलकायत दामोदरलालजी परचारग भये तब कीने। तथा पद वगेरन के आधार सों तिलकायत गोवर्धनलाल के आज्ञा लैके भये।

शृंगार—गुसाईंजी की बाललीला कौ, दूसरो "पीताम्बर को चोलना" वस्त्र केसरी (पीरे) साटन के। वागा घेरदार किनारी को बूटान वारो सुनहरी बूटा सूथन लाल श्रीमस्तक पै सुनहरी जरी की पाग कर्णफूल चार। जड़ाऊ आभरण। मध्य को शृंगार लटक बाबरी नागफणी को कतरा लूम तुर्रा। पिछवाई श्याम धरती पै सुनहरी बूटा। शृंगार बाललीला को।

मंगला में—

सन्मुख कमल सी अखियाँ लाल तुम्हारी।
इनसों तकि तकि तीर चलावत वेधत छतियाँ हमारी।
इन्हें कहा कोऊ दोष लगावत ये अजहू न संभारी।
श्री विट्ठल गिरधारी कृपानिधी सुरत ही ते सुखकारी॥

शृंगार होत में चार पद बाल लीला के होंय—

(१) पीताम्बर को चोलना पहरावत मैया।
.....
जोई सुने जाकौ मन हरे परमानन्द बलि जैया।

ग्वाल में—

(२) गोपाल माई खेलत है चकडोरी।
.....
परमानन्द दास रतिनागर चिते लई रतिजोरी।

राजभोग आये पै मिलि भोजन' के पद होंय।

(३) माला बोले पै मैया—निपट बुरो बलदाऊ।
.....
परमानन्द बलराम चवाई तैसेइ मिले सखाऊ।

राजभोग सन्मुख में—

(४) देखो री रोहिनी मैया कैसे है बलदाऊ भैया
यमुना के तीर मोहि झुझुवा बतायोरी।
.....
परमानन्द रानी द्विज बुलाय वेद मंत्रन पढ़ाय
बछिया की पूछ गहि हाथ दियो मरोरी।

उत्थापन में—मीठे हरिजु के बोलना। भोग में—आओ मेरे गोकुल के चन्दा आरती में—विमल जस वृन्दावन के चन्द को। शयन में—कहाँ-कहाँ खेले हो लालन बात कहौ मोसों बन की।

पौष कृष्णा ३० शृंगार ऐच्छिक—वस्त्र वागा घेरदार। सादा श्याम साटन के। पाग सूथन मोजा श्याम ठाडे वस्त्र सफेद जरी के। आभरण हीरा मोती के। छोटो शृंगार। श्रीमस्तक पै कतरा। पिछवाई श्याम धरती पे रुपहरी किनारी के काम की बेलबूटा बारी। पद नित्य बाल लीला के।

शृंगार में पद—

कान्हर कारो नन्द दुलारो मो नेनन को तारो।
प्राणन प्यारो जग उजियारो मोहन मीत हमारो।
दृग में राजत हिय में छाजत इक छिन होत न न्यारो।
मुरली में टेर सुनवत निश दिन रूप अनूपम वारो।

पौष शुक्ला १—शृंगार ऐच्छिक—ठंड जादा होवे सों दुहेरा वागा धरैं । वस्त्र नीले केसरी वागा चाकदार दुहेरा सूथन नीलो सादा फेटा दुहेरा ठाडे वस्त्र जरी के हरे पिछवाई हासिया वारी सादा नीली केसरी । आभरण मोती के । मध्य को शृंगार । श्रीमस्तक पे मोरशिखा कतरा वाम या पद के भाव को शृंगार होय । 'लाये हो इन्हें साथ कहो तुम कहाँ ते आये आलस भरे जो जम्हात ।'

पौष शुक्ला २—शृंगार ऐच्छिक—वस्त्र गुलाबी फूलवारे घेरदार धरें। वन्द श्याम सुनहरी धरें । छोटो शृंगार आभरण पन्ना मोती के । पाग सादा । पिछवाई फूलवारी गुलाबी ।

पौष शुक्ला ३—सोना की पाग धरी । पदाधार पर शृंगार ऐच्छिक । वस्त्र चम्पई साटन के । घेरदार पिरोजी आभरण । छोटो शृंगार । ठाडे वस्त्र श्याम पिछवाई सोभती । ये पद गवें ।

(१) सोनो शीतल लाग्यो रेन विदा भई जानी ।

(२) आज की बानक कही न परे बलि बलि गई
विगलित कच स्वर्ण पाग ढरकि रही वाम भाग अंग अंग अलसई ।

पौष शुक्ला ४—शृंगार ऐच्छिक—वागा चाकदार निकसमा । गद्दल धरें। आभरण गुलाबी मीना के । वस्त्र वादली साटन के फूलवारे । ठाडे वस्त्र जरी के । पिछवाई सोभती । पद नित्य के तथा ऐच्छिक । गद्दल केसरी निकसमां ।

पौष शुक्ला ५—विट्ठलनाथजी के यहाँ को मंगलभोग श्री गोस्वामि गोपेश्वर जी को उत्सव । वस्त्र तथा मंगलभोग की सामग्री वहाँ सों आवें हैं । पिछवाई खण्ड पीरी धरती में फूल वारी सिलमा सितारा के साथ साटन की । वस्त्र छींट साटन की पीरी धरती वारी । आभरण पिरोजा के । बागा चाकदार । पंचरंग पाग । ठाडे वस्त्र लाल पंचरंग । पाग के पद गवे । मध्य को शृंगार । मोरसिखा । आभरण पिरोजी ।

विशेषता—

विट्ठलनाथजी के आचार्य श्री गोपेश्वर लालजी को जन्म वि० सं० १९४६ में आज के दिन गोविन्दजी (लस्करिया लाल जी) के यहाँ भयो। आप गो. ति. दामोदरलाल जी महाराज के समान विनोदी तथा खेलकूद सेवा शृंगार के ठाट वाट बारे हते । आज भी कछवाई की तरह जूनी बाडी तथा चोपता को बागमहल मांडवा आदि इनको स्मरण करावे हैं आप सुन्दर हते । श्री विट्ठलवर में आपने श्रीजी के साथ अनेक मनोरथ किये । आपके संतान न होवे सों इन्दौर वारे बच्चू बाबा के पुत्र श्रीगिरधर जी को गोद लीने जिनके आज तीन बालक हैं । कल्याणराय जी, देवकीनन्दन जी, गोकुलोत्सवजी ।

पौष शुक्ला ६—गोस्वामि दामोदरलाल जी महाराज को उत्सव तथा गुसाई जी के बाल लीला को शृंगार—देहली वन्दनमाल पड़दा वगेरे केसरी गोपी वल्लभ मनमोहन को। सखड़ी में पाँच भात के साथ नारंगी भात । नौवत की वधाई आज ही झांझें नहीं बजें । पिछवाई भरत की सिलमा सितारा की । पलना झूलते श्रीनाथजी एक दिश गोवर्धनलाल दामोदरलाल झुलाते एक दिशा नन्द बाबा जसोदाजी खिलौनान सों खिलाते । ठाडे वस्त्र मेघश्याम वस्त्र चम्पई साटन के । किनारी वारे घेरदार । मोजा टकमाँ हीरा के । टोपी हीरा की । ऊपर तुर्री तीन रुपहरी काँच के नीले फुंदना झबुआ । आभरण उत्सव के । जडाऊ मध्य को शृंगार । अलक धरें चोटी धरें । हांस त्रवल सब जडाऊ बासन पीरे । पद नूतन ढंग के । जैसो आपको स्वरूप तैसी बाल लीला के । मंगला में—अरी मैया तेरो मोहन अति ही सयानो देत अटपटी गारी । कुञ्ज भवन में अचरा फार्यो हँस हँस दे दे तारी । शृंगार होत में—बाललीला के पद गवें । शृंगार सन्मुख में—लरिकाई में जोवन की छवि देखो सुन्दरि नेनन भरि भरि । राजभोग में सन्मुख (धोंधी को पद)—देखो अद्भत अवगति की गति कैसो रूप धर्यो है । उत्थापन में—ऐसो यशोदाजू को कान्ह जाको चन्द खिलोना। मोतिन लर लटकत नारायण लर लटकावलि । रामदास प्रभु दुष्ट निकन्दन भक्तन सुख को देना । भोग में—तैंने कब बरजीरी जसोदा मैया अपने साँवरे को । नन्ददास जसोदा ठाडी हँसत कहा कहत नहीं कहत गोपी प्रेम थावरे को । आरती में—महर पूत तेरो बरज्यो न माने । शयन में—मोहन माखन चोरी करत फिरत बरजो नंन्दरानी । निश दिन फिरत संग लागी लागी गोविन्द प्रभु की माता सुनि सुनि मन हरत ।

विशेषता—

आज के उत्सव नायक गोस्वामि तिलक श्री गोवर्धनलाल जी महाराज के पुत्र श्री दामोदरलाल जी धीर वीर गम्भीर विद्यावारिधी सकल कला निष्णात सुन्दर साहित्यकार सुबोधिनी के उद्भट विद्वान्, वक्ता, कथाकार, सर्वथा प्रवीण, विनोदी, क्रीडा कौतुकी थे । आपको जन्म १९५३ आज के दिन नाथद्वारा में भयो । उपनयन १९६२ में । आपने श्रीजी श्री नवनीत प्रिय के भोग राग शृंगार की विविध सेवा करि श्रीनाथ जी रिझाये । आपकूँ गोस्वामि श्री विट्ठलेश को तामस स्वरूप मान्यो जाय । श्रीजी में आज के दिन ये पद गवे जामें आपकी अनुरूपता है ।

मंगला में—अरी मैया तेरो मोहन अति ही सयानो देत अटपटी गारी ।

गुसाईंजी के तृतीय गुण तामस स्वरूप गोस्वामि तिलक गोवर्धनलाल जी

के द्वितीय पुत्र दामोदरलाल जी गुसाईंजी सों चौदहवीं पीढी में भये। प्रभु को वियोग स्वयं झेलिके विक्षेप कराय अन्त में वियोग धारण कियो।

विट्ठलेश तमरूप ह्वै रत्न पाद नृपमान।
प्रभु विक्षेप कराय फिर गहि वियोग बलवान॥

गुसाईंजी की भाँति आप में स्वरूप सौन्दर्य हो। बड़े-बड़े नेत्र गोल मुखाकृति हृष्ट पुष्ट। छोटेपन में चंचल चपल हते। एक बार दर्शन करवे पर मुग्ध होनो पड़तो। दर्शनार्थीन कूं पुनः पुनः दर्शन की लालसा रहती। श्री गोवर्धन धरण की कृपा से सब शास्त्रन के अगाध पंडित। पूर्व पक्ष उत्तर पक्ष करवे की क्षमता, शास्त्रन के गंभीर मनन अध्ययन के साथ बड़े बड़े विद्वानन को नतमस्तक कर देते। स्वभाव में महोदार हते। उदाहणार्थ—

एक समै आप अपरस की तिवारी में संध्या करत हुतो अरु व्रजपुरा के मुसलमान छीपा कून्जडा अर्जाऊ भये। 'हमें काँकरोली के कोतबाल घरबार छुड़ाय रहे हैं। व्रजपुरा सो निकारि रहे हैं। हम आपकी प्रजा हैं। कहाँ जाँय?' सुनते ही आपने जमीन निःशुल्क प्रदान करी। अरु मकान बनवायवे हेतु कृष्ण भण्डार से लिखत करि 'जो रकम चाहिये सो लेउ। ऐसो आदेश दियो। आज भी आपकी गुणगाथा गोविन्दपुरा गाय रह्यो है।

दयालुता—दुखी रोगी व्यक्तीन की तन, मन, धन से सेवा करते। औषधी आदि के लिए दवाखाना हॉस्पीटल खुलवाये।

व्यवहार कुशलता—आपकी काऊ से शत्रुता नहीं हती। आपकी दृष्टि में धनपति, गरीब, विद्वान मूर्ख सबको यथाशक्ति सम्मानपूर्वक व्यवहार राखते।

अपूर्व त्याग—श्रीजी की अतुल सम्पत्ति तिलकायत पद आपने धर्म रक्षार्थ छोड़ उदयपुर निवास कियो। कोटा की गादी भी आपने त्याग कीनी।

(५) **न्यायरक्षता**—नाथद्वारा के अनेक मुकदमान को न्यायप्रियता से फैसला किये। गरीबन पै मार न पड़े ये ध्यान राखते। आपकूं गोपाल मन्त्र एवं श्री सुदर्शनजी को पूर्ण बल हतो। वर्णाश्रम स्वराज्य संघ के अध्यक्ष रहे।

कला निपुणता—(१) तैराकी में ऐसे निपुण कि रायसागर को पार करि गये। घंटन जल में तैरते रहते। (२) मल्ल युद्ध में पूर्ण निपुण। (३) विविध क्रीडा, सतरंज, टेनिस; क्रिकेट, बिलियर्ड आदि के अच्छे खिलाड़ी हे। भारत के प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी जामनगर जाम साहब हू परास्त हैके गये। भारत की प्रसिद्ध टीम आपके यहाँते पराजित हेके सम्मानपूर्वक विदाभई। नृत्य वाद्य, गीत में पूर्णता। प्रसिद्ध गायिका सिद्धेश्वरी ने आपके संगीत ज्ञान की प्रसंसा कीनी। फूलन

के, वस्त्रन के, मोतीन के गहना, वस्त्रादि की विद्या में पारंगत। पाक शास्त्र में निपुण, अनेक सामग्री स्वयं सिद्ध करि प्रभु कों अरोगावते।

साहसी वीर—बड़े बीड़ा की गुफा में बरदर नाल की गुफा में अकेले घुसि कै सिंह को पकड़ लाये। ये साहस की पराकाष्ठा है।

सन्तति—वि० सं० १९७५ में श्री विट्ठलनाथजी वि० सं० १९८४ मृगसर वदी सप्तमी वर्तमान गो० तिलक श्री गोविन्द लाल जी महाराज।

बहूजी—आपकी दो पत्नी भागारथीजी तथा रत्नप्रभा जी (हंसा)। श्रीनाथ जी की सेवा वियोग में अपनी तपेली के ठाकुरजी कूं प्रभु मान के १९९२ श्रावण शुक्ला १५ कूं वार्ता, सुबोधनी कहते कहते नाथद्वारा श्रीजी की कदम्ब कुंज में निकुञ्जलीला में पधारे।

पौष शुक्ला ७—**शृंगार ऐच्छिक** वागा चाकदार मोती को। वस्त्र स्याम धरती में काम वारे क्रीट मोती को तथा मोती के आभरण। वनमाला को शृंगार ठाडे वस्त्र जरी के। पिछवाई सेवाभोग आदि। नित्य के पद। मोजा मोती के काम के श्याम रंग के।

पौष शुक्ला ८—घटा फिरोजी शृंगार ऐच्छिक। बागा घेरदार, पाग सूथन। खण्ड पाट पिछवाई। गादी तकिया चौकी सब पिरोजी रंग की साटन की। घटा बेग होय। आभरण पिरोजा के। छोटो शृंगार। कतरा पिरोजी रेसम को।

विशेषता—

प्रश्न—पिरोजी घटा कौन से भाव सों होय?

उत्तर—जमुनाजी की भावना सों पिरोजी घटा होय। समुद्र में जैसे लहर उठे और वो रंग बादली पिरोजी बन जाय। तेसेहू ये घटा पिरोजी होय है। नन्द दासजी की उक्ति—श्याम समुद्र में प्रेम जल पूरनता में श्री राधाजू लहर री

तैं जु नील पट ओट दयो री।

सूरदास स्वामिनी की सोभा कमल कमल प्रति भँवर ठयोरी।

संक्रान्ति—

संक्रान्ति जब भी आवे तब ये शृंगार तथा पद होय। आज मकर की संक्रान्ति भई। देहली वन्दनमाल। वस्त्र केसरी भाँति लाल धरती की छींट। बागा घेरदार। पाग मोजा सूथन छींट के। ठाडे वस्त्र सफेद चन्द्रिका। सादा छोटो शृंगार। आभरण मोती हीरा के। लूम तुर्रा पिछवाई खण्ड छींट को किनारी वारो। जब संक्रान्ति बैठे तब तिलवा भोग में आमें। तथा उत्थापन या राजभोग

में सन्मुख। लाल कपड़ा सों ढांक्यो भयो खीचरी को टोकरा आवै। राजभोग भये बाद अनवसर में सुखपाल डोल तिवारी में गोल देहली के पास प्रभु सन्मुख आवे। दड़ी खेलवे पधारे। या भाव सों दिन भर दड़ी खेलवे के पद होंय।

मंगला सन्मुख—(राग विभाष) ललन की प्रीति अमोली।

गोविन्द प्रभु बहुत कहा कहो जे जे बाते कही अपनो हृदय खोली।

शृंगार होत में—चार पद गवें (राग विभास)

(१) कंचुकी के बंद तरकि तरकि टूटे देखत मदन मोहन घनश्यामें।
....
कृष्णदास प्रभु गिरधर नागर याही भांति लजावत कामें।

(२) तेजु गुपाल हेत कंचुकी कसूमी रंगाय लई।
....
सदन कृष्णदास प्रभु गिरधर केलि अति ही सुहावनी।

(३) रसिक गोपाल लाल के संगम कंचुकी के बंद टूटे।
....
कृष्णदास प्रभु गिरधर पिय संग सुर हिडोल लीन घूटे।

(४) अति ही कठिन कुच ऊचे दोऊ तुम्बन से
गाढे उरलाय के जु मेटी काम हूक।
छीतस्वामी गिरधारी राजा मन्मथ लूट्यो,
वृन्दावन कुञ्जन में हमहू सुनी कूक।

शृंगार सम्मुख—

तरणि तनया तीर प्रात समे गेंद खेलत देर बहोरी आनन्द को कन्दवा।
....
कृष्णदास प्रभु गोवर्धन धारी लाल चारु चितवन में तोरे कंचुकी वन्दवा।

ग्वाल में बाल लीला के पद तथा राज भोग आये पै धनाश्री खीचरी के न्यौते के (१) एक बोल जो पाऊँ। (२) आज गुपाल पाहुने आये निरखि नैन अघायरी। (३) आज हमारे भोजन कीजे। (४) एक वचन मोहि दीजै रानी जू।

माला बोले पै—

खेलत में को काको गुसैयाँ।
....
सूरदास प्रभु खेल्यौ ही चाहत दाँव दियो करि नन्द दुहैया।

राजभोग सन्मुख ये पद वसन्त के शृंगार पै माघ शु० ४ को तथा संक्रान्ति के दिन। कदम्ब की मण्डली होय तब राजभोग सन्मुख में गवें।

बोलत श्याम मनोहर बैठे कदम्ब खण्ड कदम्ब की छैया।
....
कुम्भनदास ब्रज कुंवर मिलन चली रसिक कुंवर गिरधर पैंया।

भोग में—ये पद जब मोती के वस्त्र आवें तबहू गवें।

गहि रहे भामिनी की बाँह।
....
परमानन्द अटपटी हरि की सबै बात मन भाई।

आरती में—तें मेरी मोतिन की लर क्यों तोरी।
....
परमानन्द मुसकाय चली तब पूरन चन्द चकोरी।

शयन में—ग्वालन तें मेरी गेंद चुराई।
....
सूरदास मोहि यहै अचम्भो एक गई द्वै पाई।

ये शृंगार तथा पद जब भी संक्रान्ति दिन को आवे तब गवें। परन्तु उत्सव में संक्रान्ति आवे तो उत्सव को शृंगार तथा सेवा पद चले। केवल भोग मात्र आवे और जब दूसरे दिन शृंगार होय तब ये पद गवें। एक दिन पूर्व भोगी संक्रान्ति मानें और घरन में नये वस्त्र तथा अभ्यंगादि होय सामग्री अरोगे श्रीजी में भोगी की उत्सव नहीं माने। केवल नवनीत प्रिय के यहां सखड़ी में चीला की सामग्री अरोगें।

पौष शुक्ला ९—शृंगार ऐच्छिक वस्त्र केसरी साटन के फूल वारी किनारी की बागा चाकदार सेहरा जड़ाऊ पटका केसरी ठाडे वस्त्र मेघश्याम चोटी। दुमाला पै लूम तुर्रा तथा भारी वनमाला को शृंगार कुण्डलादि सब जड़ाऊ। पिछवाई भरत सिलमा सितारा की सुन्दर काम की पद नित्य के सेहरा के भाव के।

पौष शुक्ला १०—फतवी बागा घेरदार शृंगार ऐच्छिक फतवी मोती की श्याम काम वारी बागा गुलाबी। आभरण खुलमा मोती को। सतलड़ा हार। पाग सादा कलंगी। छोटो शृंगार ठाडे वस्त्र पीरे। पिछवाई भरत की गिरिराज जी के भाव की। फतवी धारण में ये पद गवे श्याम मोती की पै।

राधे तू अति रंग भरी हो।

पौष शुक्ला ११—शृंगार ऐच्छिक वस्त्र नीले केसरी साटन के तिकोने बागा पटका तिकोने सूथन श्री मस्तक पे टिपारा पिरोजा को धरें। ठाडे वस्त्र श्याम आभरण सलमा जडाऊ पंच मेल के पिछवाई साटन की हंसिया वारी। आज सांटा के रस को मण्डान होय। जब मण्डान होय वो भोग आरती में अरोगें। साँटान को रस बहुत मात्रा में होयवे सू वाकूं मण्डान कहें। शयन में सीरा अरोगे। शयन में पद "रसिकिनी रस में रहति गडी"।

पौष शुक्ला १२ (चौथी)—वस्त्र श्याम खीन खाप के बागा। चाकदार सूथन ठाडे वस्त्र लाल आभरण मोती के। पगा हीरा को। चन्द्रिका सादा। पिछवाई खण्ड श्याम खीन खाप की लाल हासिया वारी माडा की। सामग्री विविध प्रकार। सामग्री में मंगला भोग की चौकी। पद नित्य के।

पौष शुक्ला १३—पदाधार पै शृंगार ऐच्छिक। वस्त्र लाल साटन के सादा। पटका लाल पाग लाल ठाडे वस्त्र पीरे आभरण पन्ना मोती के छोटो कर्ण फूल को शृंगार। पद तानसेन को—

कित ह्वै जेहो सबेरे कहौ तुभ कहा ते आये।
हम तुमको पहचानत नाही मेरे घर आवत भोरे।
लाल पाग पीताम्बर सोहे ये ही विधि आवत तेरे।
तानसेन के प्रभु नटवर नागर सब सखियन मिलि घेरे।
आज सखी अति वने गिरधरन।
....
गोविन्द प्रभु चित चोर्यो त्रैलोक जुवती मनहरन।

पौष शुक्ला १४—शृंगार ऐच्छिक आज घटा अधरंग की। वस्त्र बागा भेरदार पाग। सूथन। ठाडे वस्त्र। पिछवाई खण्ड। गादी तकिया चौकी ये सब अधरंग साटन के आभरण माणक मोती के छोटो शृंगार कतरा श्रीमस्तक पै अधरंग कर्ण फूल को शृंगार।

पौष शुक्ला १५—ऐच्छिक शृंगार। बारह महिनान की पूर्णिमान में आज की ही पूर्णिमा ऐसी है जापै ऐच्छिक शृंगार करि सकें। चार पाँच बरस सूं ये ही शृंगार प्रायः होय है।

वस्त्र भरत के गुलाबी साटन के गहरे। बागा चाकदार। श्रीमस्तक पै कुलहे पै खोंप। उपरना भारी कुण्डल को शृंगार। पिछवाई भरत की। खण्ड भी वैसो ही। ठाडे वस्त्र शोभते भये। आज मेघश्याम धरें। आभरण सब जड़ाऊ। कुलहे जड़ाऊ आदि।

गोवर्धनधारी श्रीजी की पौष सुख सेवा मांझ,
विविध मनोरथन सों रस बरसावैं हैं।
दाऊजी को जनम द्यौस कल्याणराय विट्ठलेश जी को
गोविन्द गोपेश्वर औ. दामोदर भावैं हैं॥
पीताम्बर चोलना छटान की छटा नव नव
फतुई दुहेरा वस्त्र गद्दल के सुहावैं हैं
मंगल भोग द्वादसी पौष को जु मास यह
पंचम तरंग पूरण करि गोविन्द चरण लावैं हैं।

या प्रकार पौष मास की सेवा उत्सव भावना सम्पूर्ण भई।

श्रीनाथजी

श्रीनाथ—सेवा—रसोदधि

षष्ठ तरंग

माघ-फाल्गुन-चैत्र मास

[नित्य सेवा, उत्सव एवं महोत्सव]

(स्वामिनी—श्री चन्द्रावलीजी)